शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir जनवरी २०१३ संस्करण ११

ज्ञानी को कर्ता, कर्म और उसका फल आत्मा से भिन्न है, ऐसी प्रतीति नहीं होती है।

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव! सिद्ध-मार्ग ई-पत्रिका का ग्यारहवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में गुरुदेव महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व दिल्ली में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत हैं ।

"श्रीगुरुदेव का प्रवचन"

सभी का बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत । रविदत्ता के द्वारा किया गया प्रश्न - साक्षात्कार के पश्चात् साधक के जीवन में क्या बदलाव आता है और वह जीवन कैसे व्यतीत करता है?

सुबह बाबाजी के शब्द ले आया था तो वही सुना देता हूँ। इसमें बाबाजी ने अच्छी तरह से लिखा है कि उस ज्ञानी को कर्ता, कर्म और उसका फल आत्मा से भिन्न है, ऐसी प्रतीति नहीं होती है। कर्ता,कर्म का फल अभी हम सोचते हैं मैं करता हूँ,कर्म मुझसे होता है और उसका फल मुझे चाहिए। ज्ञानी ये सब आत्मा से ही होता है, ऐसा अनुभव करता है,उसे सब आत्म-स्वरूप ही प्रतीत होता है। इसलिए ज्ञानी को कर्तव्य बुद्धि से कोई कर्म नहीं। द्वैत के अभाव की अनुभूति के कारण उसे असंगता नित्य सिद्ध है।

राग,द्वेष आदि से भरा हुआ मन आत्मा का अनुसंधान नहीं कर सकता ।

यही असहन शक्ति नाम की वेदान्त में पाँचवीं भूमिका है, यही जीवन मुक्ति है। जीवन मुक्ति के आनन्द में जब तक व्यक्ति स्थिर नहीं होता तब तक वेदान्त के अर्थ का बराबर चिन्तन करना चाहिए। सब वासुदेव मय है ये बातें मन से ग्रहण हों परन्तु वह यदि स्थिर न रहें और मन तथा शरीर अन्य वस्तुओं के सुख को माँगता रहे तो निष्ठा बँधेगी ही नहीं। निष्ठा न बँधने से मन चंचल रहेगा, जिससे स्वरूप का अनुसंधान भी नहीं रहेगा। परिणामतः जीवन-मुक्ति का आनन्द नहीं मिलेगा। जैसे जैसे मन स्थिर होगा तो वही स्थिरता फिर हमारे कर्म में, हमारे शरीर में भी आयेगी। स्थिरता सभी जगह व्याप्त होगी। बाबाजी का कहना था कि सन्तजनों की बात पर हम पुनः पुनः विचार करें। तैरना तुम्बे का स्वभाव है परन्तु उसमें लोहा भरा हो तो तैर नहीं सकता। उसी प्रकार राग,द्वेष आदि से भरा हुआ मन आत्मा का अनुसंधान नहीं कर सकता। परन्तु संसारी विषयों का यह जहर अगर सत्संग से उतर जाता है तो स्वस्वरूप का अनुसंधान पुनः हो सकता है। आत्मा के आनन्द की पुनः अनुभूति हो सकती है। वेदान्त मन, बुद्धि, अहंकार इन्हें अलग-अलग मानता है। तो इसीलिए हम सोचें कि आत्म-साक्षात्कार किसको होता है? अभी तो हमें यही कहना पड़ेगा कि जीव को साक्षात्कार होता है क्योंकि जीव है इसके लिए मन,बुद्धि,चित और अंहकार हैं। चित जीव नहीं है तो मन, बुद्धि इत्यादि कुछ है ही नहीं। जैसे अभी आपको मैं पूछूँ कि

कौन जानता है कि मैं फलाँ नाम का आदमी हूँ? तो आप कहोगे कि मन जानता है, बुद्धि जानती है, अहंकार जानता है लेकिन उससे भी अन्तर में जिसको हम आत्मा कहते हैं, जीव कहते हैं, वो जानता है कि मैं क्या हूँ। हम मन, बुद्धि से ही सब कुछ करते हैं परन्तु जब हम थोड़ी गहराई में जाते हैं तो हम समझ सकते हैं कि आत्मा का साक्षात्कार किसको होता है। अगर हम सच्चे जिज्ञासु हैं तो हम समझते हैं, जानतें हैं, कि हम क्या प्राप्त करना चाहते हैं। जैसे हम बजार में जाते हैं तो कोई वस्तु की हमें जानकारी होती है कि वस्तु क्या है, कैसे बनी है। ग्राहक हर तरह का होता है, दस रूपये वाला भी ग्राहक होता है, सौ रूपये वाला भी ग्राहक होता है,हजार रूपये वाला भी और लाख रुपये वाला भी ग्राहक होता है। एक टेबल दस रुपये में नहीं बनता है परन्तु हम अपना अनुमान लगाते हैं कि ये टेबल दस रुपये मे भी बन सकता है। जिस फैक्ट्री में ऐसी करोड़ो टेबल बनती हैं तो उसका मालिक हमको दस रुपये में बेच सकता है क्योंकि वो लकड़ी भी ऐसी सस्ती खरीदता है और बनाकर बेच सकता है। परन्तु अगर कोई अच्छा कारीगर होता है, थोड़ा सा समय लगाता है तो वो इसको सौ रुपये में भी बेचता है। और भी अच्छा हो तो हजार में बेचता है। ये लाख और करोड़ में भी बेच सकता है अगर वो उसके उपर संगमरमर का पत्थर लगा दे, कहीं थोड़ा हीरा लगा दे, लेकिन नया सब करने के लिए समय लगता है और फिर उसकी कीमत बढ़ती जाती है। बाबाजी कहते थे दस रुपये का गुरु, सौ रुपये का गुरु, हजार रुपये का गुरु, लाख रुपये का गुरु, करोड़ों का भी गुरु आप प्राप्त कर सकते हैं। अभी आपको अपनी क्षमता देखनी पड़ेगी

अगर हम सच्चे जिज्ञासु हैं तो हम समझते हैं, जानते हैं कि हम क्या प्राप्त करना चाहते हैं

बाबाजी हमेशा कहते थे कि कबीर साहब ने कहा है -पानी पीना छान कर, गुरु करना पहचान कर

कि आप दस वाले हो, सौ वाले हो, हजार वाले हो, लाखों वाले हो, या करोड़ों वाले हो। आपकी क्षमता दस की है और आप करोड़ वाले के पास पहुँचोगे तो वो तो आपको भगा देगा और बोलेगा कि तुम्हारे में वो क्षमता ही नहीं है कि इसको तुम ले सको। तो वैसे मैं मानता हूँ आध्यात्मिक जीवन में कहीं न कहीं हमारी शुरुआत होती है और जहाँ कहीं से भी हमारी शुरुआत होती है हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं। जैसे जैसे हम आगे बढ़ते हैं, वैसेवै से हमारी बुद्धि का विकास होता है, हमें समझ आने लगता है कि वास्तव में क्या ठीक है। बाबाजी हमेशा कहते थे कि कबीर साहब ने कहा है- पानी पीना छान कर, गुरु करना पहचानकर कि हम पानी वैसे ही नहीं पीते हैं, पहले अपने हाथ धो लेते हैं कि हमारे हाथों की गन्दगी उसमें ना जाऐ, कपड़ा रख पानी छान लेते हैं । आज कल तो हम एक्वागार्ड लगा लेते हैं, पहले उबाल लेते थे। तो अगर हम किसी को गुरु भी मानें तो पहले उनके कुछ सत्संगों में जाना पड़ेगा, उनके आश्रम में समय बिताना पड़ेगा, उनकी संगति में रहना पड़ेगा। आजकल आस्था है, संस्कार है, और बहुत सारे चैनल हैं। तो यह माध्यम हो गया है कि किसी ने भी थोड़ा बहुत पढ़ लिया, कुछ जान लिया और वो ही अपना प्रवचन दे दिया तो हम कभी-कभी उनके प्रवचन से प्रभावित हो सकते हैं। फिर भी हमें उनका जो कोई भी स्थान होगा वहाँ जाकर देखना पड़ेगा। शास्त्र यह भी कहता है कि हम यह भी देखें कि उनकी जो सिखावनी है, उनकी जो साधना है, उससे उनके पास रहने वाले जो अनुयायी हैं, उनके जीवन में कितना परिवर्तन आया है। हमें गुरु को हथौड़ी-छैनी ले जाकर नहीं ठोकना है और ऐसे शारीरिक रूप से

साधना मार्ग पर चलते-चलते लगता है कि सब ठीक चल रहा है परन्तु अचानक कोई ना कोई वासना जाने कहाँ से टपक पड़ती है और प्रगति में बाधा ही नहीं बल्की और भी गिरा देती है

से नहीं परन्तु उनके आस-पास जो जीव रह रहा है, वो देखकर, कि यहाँ के आध्यत्मिक वातावरण से कोई भी आता हो, चाहे वो कितना भी जड़ हो, कितना भी समझदार हो, उसके अन्दर कुछ जागृति होनी चाहिए। उस वातावरण में किसी भी व्यक्ति को थोड़ी भी जागृति हो जाती है तो आप समझ सकते हैं कि यहाँ कुछ अच्छा कार्य भगवान के आशीर्वाद से हो रहा है। तो इस तरह से हम गुरु को परखें और गुरु को पहचानें । साधना मार्ग पर चलते-चलते लगता है कि सब ठीक चल रहा है परन्तु अचानक कोई ना कोई वासना जाने कहाँ से टपक पड़ती है और प्रगति में बाधा ही नहीं बल्की और भी गिरा देती है तो उससे कैसे निपटा जाय और वासना पर कैसे विजय प्राप्त की जाये? जैसे हम रास्ते पर चलते हैं तो आँख बन्द करके तो नहीं चलते। आखें हमेशा ही खुली रखकर ही हम चलते हैं कि कहीं गलत जगह पैर न गिर जाये, कहीं गढ्ढे़ में पैर न गिरे, कहीं केले के छिलके पर पैर न गिरे। ध्यान देकर चलते हैं फिर भी कभी हो जाता है कि कोई आ जाता है, थोड़ा सा बात करने लगता है और जब बात करने लगता है तो थोड़ा ध्यान रास्ते पर से कम हो जाता है। हम उससे बात करने में लग जाते हैं और बातों में अगर कोई गहरा विषय हो या फिर हमारे रुचि के अनुसार कोई विषय हो तब हम उसमें घुल-मिल जाते हैं और हम फिर भूल जाते हैं कि मुझे नीचे देखते हुए चलना है। तो बाबाजी कहते थे हमेशा जागृत रहो, जागते रहो। इस जीवन में भी वासनाएँ हम कई जीवनों से लेकर चलते हैं, वासना इसी जीवन की है ऐसा नहीं। हमारे अन्दर ७२ हजार नाड़ियाँ हैं या ७२ लाख नाड़ियाँ हैं या सात करोड़ बीस लाख नाड़ियाँ हैं, जितनी भी नाड़ियाँ हों, उन नाड़ियों में इन वासनाओं के बीज रखे हुऐ हैं क्योंकि कई

यदि वासना पर विजय प्राप्त करनी है तो हमें अपने कर्मों की साधना से निरन्तर अभ्यास करना होगा

लोग साधना में ऐसा प्रश्न करते हैं कि कई बार मुझे ऐसा लगता है कि मुझे फलाँ वासना से जीत हो गयी, फलाँ वासना को मैंने अपने शरीर से निकाल दिया है और कई वर्षो तक अच्छा चलता रहा परन्तु एक दिन वह वासना फिर उठ आयी तो प्रश्न मन में यह होता है कि ये कहाँ से आयी? मैंने सोचा था कि मैंने तो इसे जीत लिया था तो ये क्या कुछ शेष बचा हुआ है या कुछ नया है। एक स्तर पर कुछ समय तक हमनें इसे जीत लिया था, परन्तु हम साधना करते हुए अपने अन्तर में कुछ और गहराई में गऐ तो और भी पुराना होगा जो निकल कर आया है। यदि वासना पर विजय प्राप्त करनी है तो हमें अपने कर्मों की साधना से निरन्तर अभ्यास करना होगा।

।।सद्गुरुनाथ महाराज की जय।।